# पंचम अध्याय

## उपसंहार

## उपसंहार

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में पिछले चार अध्यायों में विभिन्न दृष्टियों से मैंने 'शम्बूक'में वर्णित समस्याओं का शोध लगाने का अपनी ओर से प्रयत्न किया है । इसी आधार पर कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

इस लघु शोध प्रबंध में मुख्य चार अध्याय हैं। गत चार अध्यायों में जगदीश गुप्त जी का सामान्य परिचय तथा राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है । साथ ही 'शम्बूक वध' की प्राचीन कथा आज की आधुनिक स्थितीयों से किस प्रकार जुड़ी हुई है, यह समझाने का प्रयत्न किया है ।

प्रथम अध्याय में 'जगदीश गुप्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व'का सामान्य परिचय दिया है । जगदीश गुप्त जी का जीवन परिचय मुझे किसी पुस्तक में प्राप्त नहीं हुआ । मैंने उनका जीवन परिचय अनेक पुस्तकों में खोजने का प्रयास किया परंतु मैं असफल रहा । बाद में मैंने स्वयं कवि से पत्राचार किया , तब स्वयं कवि की छपी हुई संक्षिप्त परिचय पत्रिका मुझे मिली । उस पत्रिका के आधार पर मैंने उनका जीवन परिचय लिखा है ।

जगदीश गुप्त मुलतः कवि और चित्रकार हैं । उन्होंने आलोचना के क्षेत्र में भी सफलता पूर्वक अपनी लेखनी चलाई है । गुप्त जी ने लिखने का कार्य सन 1945 से ही आरंभ किया है । उनकी आज तक अनेक काव्य-कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं । आप आज के लब्ध प्रतिष्ठ कवियों में एक हैं । साथ ही वे एक समर्थ आलोचक, शोधकर्ता एवं संपादक भी हैं ।

गुप्त जी को बचपन से ही काव्य पठन करने की रुचि थी । वे छात्र जीवन में ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि के थे । उनका संपर्क डॉ. नवल बिहारी मिश्र जैसे समीक्षकों तथा अनूप शर्मा, वंशीधर शुक्ल और कृपाण जी के साथ आया,जिससे उनके मन में साहित्य के प्रति रुचि निर्माण हुई ।

डॉ. गुप्त जी सन 1950 से हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करत रहे, एवं कई वर्षों तक विभागाध्यक्ष भी रहे । साथ ही उन्होंने अनेक कृतियों का निर्माण किया, जिसमें काव्य संग्रह,संवाद काव्य,संपादित संकलन और साहित्य समीक्षा मुख्य हैं । उनकी उम्र लगभग 67 वर्ष की हुई है, फिर भी वे आजीवन लेखन कार्य में संलग्न रहे हैं। उनकी रचना 'शांता' पूर्णता के क्रम में है ।

गुप्त जी ने अपने काव्य में वास्तविक और यथार्थ स्थिति का चित्रण किया है । उन्होंने यथार्थवादी चित्रण के साथ - साथ आदर्शवादी दृष्टिकोण भी अपनाया है । इसलिए गुप्त जी को हम आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कवि कह सकते हैं । उनकी कला, कला के लिए नहीं, जीवन के लिए है । इस कारण ही उनके चित्रों में और काव्य में हमें जीवन का चित्र स्पष्ट रुप से दिखाई देता है । काव्य लेखन में उन्होंने पौराणिक संदर्भ लिए हैं, पर उसमें आज की राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति गहराई से अंकित की है । इस प्रकार नई कविता के प्रवक्ताओं में जगदीश गुप्त का विशिष्ट स्थान है । वे अपनी निष्ठा,स्पष्टवादिता एवं सैद्धांतिक आग्रह के लिए विख्यात हैं । छायावाद के बाद हिंदी साहित्य में डॉ. जगदीश गुप्त का महत्वपूर्ण स्थान है ।

द्वितीय अध्याय में इस बात का विवेचन किया है कि, 'शम्बूक' का अध्ययन करने के पश्चात कौनसी राजनीतिक समस्याएँ स्पष्ट होती हैं । कवि ने शम्बूक के माध्यम से अनेक राजनीतिक समस्याओं को उठाया है जिनमें प्रमुख हैं -- निरंकुश राजसत्ता, आज जनता से विमुख राजनीति,राजनीतिज्ञों का पतन, साम्यवाद बनाम राजनीति, युद्ध और राजनीति आदि।

'शम्बूक ' आधुनिक चेतना का काव्य है । इसमें कवि सामंतीय व्यवस्था को नकारता है । वह सत्ता पक्ष को उसकी अंधी एवं आराजकतावादी नीतियों के प्रति सचेत करता है। आज की राजनीति जनता के हित एवं कल्याण से जुड़ी राजनीति नहीं है । वह तो कुर्सी से चिपकी चापलूसों की राजनीति बन चुकी है। राजसत्ता ने सतर्कता से निर्णय लेना चाहिए । चापलूसों के कहने पर कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए । ऐसा निर्णय चापलूसों के हित का होता है, पर वही निर्णय आम जनता के लिए चक्की के पाट बन जाता है । इसलिए कवि ने सामंतीय व्यवस्था एवं चापलूसी राजनीति का विरोध किया है ।

राजनीतिक नेताओं के आचरण में स्वार्थपरक मनोवृत्ति दिखाई देती है । आज की राजनीतिक व्यवस्था में उच्च वर्ग सुरक्षित स्थान पर बैठा हुआ है । परंतु सामान्य जनता को सुरक्षितता नहीं है । सभी मानव समान हैं, तो फिर धर्म के नाम पर मनुष्य ही मनुष्य का हत्यारा क्यों बन रहा हैं ? कवि की दृष्टि से नेता सारी प्रजा का प्रतिरुप है । सभी लोग भूमि-पुत्र हैं, अतः मानव - मानव के बीच असमानता का व्यवहार करना अन्याय है ।

कितने ही दिनों से आदिवासी तथा पिछड़े हुए वर्ग के लोग अनेक प्रकार की यातनाएँ सहन कर रहे हैं । परंतु शासक वर्ग इन लोगों का शोषण ही करता है । आज के राजनीतिज्ञ साम्यवाद के नारे लगाते हैं, परंतु दीन-दलितों का शोषण करते हैं । मुँह में राम और बगल में

छुरी' जैसी उनकी नीति होती है । शोषितों के साथ मानवता का व्यवहार करना आवश्यक है ।

कवि ने यह स्पष्ट किया है कि युद्ध और राजनीति का गहरा संबंध होता है । राजनीतिज्ञों का अविवेक और बर्बरता से युद्धजनक स्थिति निर्माण होती है । युद्ध मुलतः राजनीतिक लोगों के मन की उपज है । समुदाय नहीं लड़ना चाहता, पर युद्ध की विषैली लपटें राजनीतिक नेताओं की साँस से ही फैलती हैं । वे अपने स्वार्थ तथा लोलुपता के कारण ही युद्धों का निर्माण करते हैं । जिसमें अपार प्राण तथा वित्त-हानि होती है।

कवि ने इसकी ओर भी संकेत किया है कि राजनीतिक व्यवस्था में लोकतांत्रिक मूल्यों की बलात हत्या हो रही है । कवि की धारणा है कि आज प्रजातंत्र भारत में स्वातंत्र्य , समता और बंधुता की वृद्धि होनी चाहिए ।

तीसरे अध्याय में 'शम्बूक ' में वर्णित सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया है । कवि का प्रमुख उद्देश्य मानव -मात्र की समानता की भूमि पर वर्णव्यवस्थारहित सच्चे मनुष्यत्व की स्थापना करना रहा है ।

समाज में वर्गसीमित स्वार्थों के कारण जातिव्यवस्था निर्माण हुई है । निम्न जाति के लोगों को अश्पृश्य माना जाने लगा, इससे ही अश्पृश्यता की भावना समाज में रुढ हो गयी । अश्पृश्यता मानवता पर लगा एक कलंक है । इसलिए गुप्त जी ने इसका कड़ा विरोध किया है । गुप्त जी घोषणा करते हैं कि सभी पृथ्वीपुत्र हैं , अतः सभी समान है । जन्म से सभी समान होते हैं । अतः स्पृश्य अस्पृश्य का भेदभाव करना समाज की दृष्टि से घातक है । सभी को ज्ञान देना चाहिए और वर्ग - भेद की सीमा तोड़ कर सभी का विकास करना चाहिए । समाज में नई दृष्टि और नयी चेतना निर्माण कर के जातिव्यवस्था का समूल उच्चाटन करना आवश्यक है ।

सैंकड़ो वर्षों से अश्पृश्य जातियों पर अत्याचार किया जा रहे हैं । कानून से अश्पृश्यता समाप्त की हैं, परंतु लोगों के मन से उसका उन्मूलन नहीं हुआ है । कवि ने यह भावना व्यक्त की है कि ऐसे अस्पृश्य लोगों को स्वाधीन करना और उनको समानाधिकार देकर उनकी उन्नति करना हमार कर्तव्य है ।

इस समाज में केवल दो ही जातियाँ हैं - शोषक और शोषित । शोषित मान्व जाति

के लिए घोर अभिशाप है । शोषण की चक्की के पाटों में आज दलित ,मजदूर तथा कृषक पीसे जा रहे हैं । उच्च वर्ग के लोग इनका शोषण करते हैं । इससे ही समाज में विषमता बढ़ी है । अतः कवि ने शम्बूक के माध्यम से समतामूलक समाज और संस्कृति की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत किया है ।- कवि ने स्वयं कहा है कि मेरी कृति में मनुष्यत्व से श्रेष्ठ कुछ नहीं है । कवि को समाज के निम्न लोगों से विशेष सहानुभूति है । जो असहाय हैं, दलित हैं, दीन हैं, दुखी हैं उनकी सहायता करना कवि अपना प्रथम कर्तव्य मानते हैं । कवि उस समाज को सुसंस्कृत कहते है, जिस समाज में व्यक्ति का सम्मान होता है । जो राज्य संस्कृति से रहित है, वह दर्प मात्र है ।

इस काव्य के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया है कि आज के वैज्ञानिक युग में भी समाज रुढ़ि- परंपरा तथा अंधविश्वासों से मुक्त नहीं हुआ है । समाज के अनेक दोषों में रुढ़ि-परंपरा और अंधविश्वास का मोह ऐसा दोष है, जो अनेक दोषों का मूल है । सामान्य लोगों में रुढियों से इतना मोह होता है कि रुढियाँ बड़ी कठिनाई से टूट पाती हैं । अंधविश्वास के कारण ही मनुष्य में असंतोष, निराशा आ जाती है । आज समाज में अनेक प्रकार के अंधविश्वास हैं, जो समाज के लिए विघातक हैं, जनता के हित में बाधा डालने वाले हैं ।

चौथें अध्याय में यह समझने प्रयत्न किया है कि 'शम्बूक' की कथा पुरानी है, परंतु वह आज के राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन से किस प्रकार जुड़ी हुअी है । रामायण की 'शम्बूक-वध' की कथा का आधार कवि ने लिया है पर इस कथा के माध्यम से राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया है । राम की राजव्यवस्था स्वार्थ से ग्रस्त है अतः उसने शम्बूक का वध किया । उसी प्रकार आज भी अनेकों शम्बूकों की आवाज दबायी जाती है । राजनीतिक नेताओं में स्वार्थपरक मनोवृत्ति दिखाई देती है ।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में न्याय को महत्वपूर्ण स्थान है,परंतु सामान्य जनता को न्याय मिलना कठिन हो गया है । जिस प्रकार राम ने सत्य-असत्य का विचार न कर शम्बूक का वध किया । इस प्रकार वर्तमान न्याय व्यवस्था में यह दोष है कि वह बहुत महँगा और साधारण व्यक्ति की पहुँच के बाहर हो गया है। मुकदमें बहुत लम्बे चलते हैं और ज्यों ज्यों मुकदमा खींचता है, त्यों त्यों वकिलों की फीस भी दरिद्र, द्रौपदी के चीर की तरह बढ़ती जा रही है । ऐसी अवस्था

में आज सामान्य और दीन -दलित लोगों को न्याय नहीं मिल पाता ।

शूद्र शम्बूक ने तप किया । इस अपराध के लिए उसे दंड दिया गया । स्वराज्य प्राप्ति के बावजूद अपने ही स्वराज्य में शम्बूक जैसे दलितों का सरे आज शोषण किया जाता है । अछूत लोगों को देवदर्शन से वंचित रखा जाता है । उनके साथ असभ्य,अपमानपूर्ण वर्तन किया जाता है । उनकी बस्तियाँ जलाई जाती हैं । उनको नग्न बनाकर उनका जुलूस निकाला जाता है । मंदिर के दरवाजें तक पहुँचते ही उनका कत्ल किया जाता है । रुढ़ि परंपरा ओं का उल्लंघन करने से उन पर बहिष्कार डाला जाता है । कानून के द्वारा जाति -व्यवस्था नष्ट की है, परंतु मानव मन से उसका पूर्णतः उच्चाटन नहीं हुआ है ।

आज सामाजिक समस्याओं में जातिव्यवस्था,शोषितो की दुर्दशा, और रुढि- परंपरा तथा अंधविश्वास प्रमुख हैं । इन समस्याओं को कवि ने 'शम्बूक-वध' की कथा के द्वारा उठाया है, उसके साथ ही इन समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत किये हैं । इसलिए 'शम्बूक' के कथा के संबंध में ऐसा कहा जा सकता है-- कि 'शम्बूक' की कथा पुरानी है लेकिन उसमे व्यथा नई है।